International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-04-2024, Accepted: 14-05-2024, Published: 30-05-2024
Volume 10, Issue 2, 2024, Page No. 31-34

हरियाणवी लोकजीवन की अपरिचित विधाओं का सैद्धांतिक अवलोकन

महासिंह पूनिया
हिन्दी विभागाध्यक्ष, आई.आई.एच.एस. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

सारांश
हरियाणवी लोकजीवन और लोक साहित्य का परस्पर गहरा संबंध है। लोकविनोदी प्रवृति हरियाणा के लोगों की खास विशेषता है, लोक में रचित साहित्य ही लोक साहित्य है। लोक साहित्य का प्रकीर्ण स्वरूप लोक विनोद है। लोक विनोद की अनेक विधाएं लोक जीवन में मोतियों की तरह बिखरी हुई पड़ी हैं। इन विधाओं को अभी तक सैद्धांतिक स्वरूप नहीं दिया गया है। इस शोध पत्र में 20 से अधिक लोक साहित्यिक विधाओं को सैद्धांतिक स्वरूप प्रदान किया गया है। इन विधाओं में लोक विनोद, जनवार्ता, हाजिरजवाबी, बुझावल, मखौल, ब्योंक, नकल, मसखरी, गप्प, गपोड़, गडंग़, मिसल, मनोविनोद, बतंगड़, मजाक, चीड़–चबोड़, हंसी ठठ्ठा, फरड़े, अंघाई, ठोला–ठसका, चुटकला आदि शामिल हैं।

मूल शब्दः अपरिचित विधाओं, हरियाणवी लोकजीवन, हरियाणवी लोकजीवन

हरियाणवी लोकजीवन और लोक साहित्य का परस्पर गहरा संबंध है। लोकविनोदी प्रवृति हरियाणा के लोगों की खास विशेषता है, लोक में रचित साहित्य ही लोक साहित्य है। लोक साहित्य का प्रकीर्ण स्वरूप लोक विनोद है। लोक विनोद की अनेक विधाएं लोक जीवन में मोतियों की तरह बिखरी हुई पड़ी हैं। इन विधाओं को अभी तक सैद्धांतिक स्वरूप नहीं दिया गया है।

लोक विनोद की परिभाषा

लोकविनोद और हरियाणवी लोकजीवन का परस्पर गहरा सम्बन्ध है लोकविनोद 'लोक' एवं 'विनोद' शब्दों के मेल से बना है। लोक से अभिप्राय सामाजिक जीवन से है जबकि विनोद से अभिप्राय विनोदी प्रवृति से है। ''लोकविनोद से अभिप्राय है लोकजीवन में घटने वाली विनोदपूर्ण घटनाएं।'' साहित्यिक दृष्टि से लोकविनोद के अंतर्गत हास्य से संबंधित वे लोक विधाएं समाहित हैं जिनके माध्यम से जनमानस को हंसने का मौका मिलता है। किसी एक शब्द में इस वैविध्य का समाहार यदि सम्भव है तो वह शब्द है लोकविनोद। 'विनोद' शब्द संस्कृत का होते हुए भी लोकप्रचलित है। अकबर–बीरबल विनोद के प्रसंग में यह पर्याप्त लोकप्रिय है। लोकवार्ता की विधाओं के आरंभ में भी 'लोक' शब्द का प्रयोग खुल कर किया जा रहा है, बल्कि इसे अनिवार्य–सा ही मान लिया गया है।

लोक विनोद का सैद्धांतिक स्वरूप

लोकविनोद हरियाणवी लोक साहित्य के अंतर्गत प्रकीर्ण साहित्य की वह विधा है जिसमें लोकजीवन की हास्यात्मक अभिव्यक्तियों के साथ–साथ लोकसाहित्य की प्रकीर्ण विधाएं भी समाहित हैं। सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दृष्टि से लोक विनोद के अनेक बिंदुओं पर वैचारिक मंथन किया जा सकता है। जो इस प्रकार हैं
लोकविनोद के स्वरूप और सरंचना का निर्माण नाना प्रकार के विरोधाभासों (पैराडॉक्सिज) से हुआ है। यह परम्परागत भी है और समसामयिक भी। आत्मानुभूति और लोकानुभूति के तत्वों का सामंजस्य भी यहां द्रष्टव्य है।

लोक विनोद की विधाएं

1. जनवार्ता

जनवार्ता शब्द का निर्माण जन एवं वार्ता शब्द से बना है। जन से अभिप्राय जनता एवं लोग हैं जबकि वार्ता से अभिप्राय बातचीत है। जनवार्ता से अभिप्राय लोकजीवन में बातचीत से लिया गया है। हरियाणवी लोकजीवन में चौपालों, बैठकों में हुक्के पर जो मनोरंजक एवं सार्थक बातचीत होती है उसे जनवार्ता कहा जा सकता है। ''देवी शंकर प्रभाकर के अनुसार– हुक्का पीते हुए बड़े–बूढ़ों की बातें बड़ी रोचक और रसभरी होती हैं। हरियाणवी लोग कितने विनोदी स्वभाव के होते हैं इसका पता उनमें परस्पर होने वाली जनवार्ता से होता है। जनवार्ता एक ऐसी ही विधा है जिसमें सुबह से लेकर शाम तक हरियाणा प्रदेश के लोग तो बातचीत करते हैं, उसमें हास्यात्मक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

2. हाजिरजवाबी

हरियाणवीं लोकविनोद की एक महत्वपूर्ण विधा हाजिर जवाबी है। हाजिरजवाबी जवाब तुरंत हाजिर होने से बना है। वास्तव में यह मानवीय स्वभाव का प्रतीक है। हाजिर जवाबी से अभिप्राय किसी भी सवाल का तुरंत जवाब देना या जवाब हाजिर रहना। जवाब सुनने वाला एवं आस–पास बैठे व्यक्ति हाजिर जवाबी का उदाहरण सुनकर सहज ही ठहाका लगा उठते हैं। इसके साथ ही हाजिरजवाबी सवाल का जवाब देने की तत्परता को भी कहा जाता है। एक व्यक्ति बोलता है और दूसरा तत्परता से उसका जवाब देता है। वास्तव में हाजिरजवाबी त्वरित उत्तर देने की परिचायक है। ''कम शब्दों में सटीक बात हाजिरजवाबी की अभिव्यक्ति है। इसके माध्यम से छोटा एवं बौद्धिक व ज्ञान से परिपूर्ण उत्तर हाजिरजवाबी की प्रस्तुति का माध्यम होता है। हाजिरजवाबी के अंतर्गत बेबाकीपन, सटीकता, स्पष्टवादिता, त्वरितता, ज्ञानात्मकता, अनुभवपरकता के साथ–साथ मनोरंजनात्मकता भी विशेष गुण होते हैं।''

3. बुझावल

लोक विनोद जिनमें कौतुहलपूर्ण परिस्थिति का स्पष्टीकरण वांछित होता है बुझौवल कहते हैं जिनमें एक व्यक्ति प्रश्न करता है और दूसरा उत्तर देता है। यह मनोरंजक कहानियां भी होती हैं और सार्वजनिक ज्ञान की वृद्धि करने वाला बौद्धिक व्यायाम भी। जिसमें कभी–कभी बहुत ही तत्व की बातें पकड़ में आती हैं। बच्चों की बुद्धि एवं शाण चढ़ाने के लिए गांव में बहुत सी पहेलियां जिन्हें हम बुझौवल कहते हैं प्रचलित हैं। बुझौवल बड़े गुढ़ार्थ वाले होते हैं। बुझौवल का अर्थ है जिज्ञासा। बुझौवल के द्वारा दूसरे साथी की ज्ञान गठरी की तलाशी ली जाती है।

4. मखौल

'मखौल' शब्द मजाक एवं हास्य–ठठा का पर्याय है। मखौल करने वाले व्यक्ति को मखौलिया कहा जाता है, मखौल में सामुहिकता का भाव समाहित होता है। मखौलिया व्यक्ति विनोदी प्रवृति का होता है। उसकी कही हुई बात का लोग बुरा नहीं मानते क्योंकि वे उसके विषय में पहले से ही जानते होते हैं। मखौल लोकजीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मखौल किसी भी घटना, शारीरिक विकृति व व्यक्ति द्वारा किए गए अपरिपक्व कार्यों को लेकर किया जा सकता है। ''मखौल का उद्देश्य केवल मनोरंजन होता है।

5. ब्योंक

ब्योंक से अभिप्राय उस उपनाम से है जो कुटंब के व्यवसाय गुण या दोष आदि के आधार पर जुड़ा हुआ होता है। ब्योंक लोकजीवन की लोक पारंपरिक विधा है। इसका संबंध किसी घटना से होता है। जब वह घटना लोकप्रिय हो जाती है तो उस घटना के आधार पर जो उपनाम निकल कर आता है उसे ब्योंक की संज्ञा दी जाती है। हरियाणवी लोकजीवन में शायद ही कोई ऐसा गांव, घर या परिवार हो जिसका संबंध ब्योंक से न हो। कहना न होगा देहात में तो असली नाम से कम बल्कि ब्योंक (उपनाम) से ज्यादा जाना जाता

6. नकल

नकल वास्तव में हास्यात्मक अनुकृति है। इसको अनुकरण की क्रिया भी कहा जाता है। नकल के माध्यम से व्यंग्य कसना भी होता है। जो नकल मारते हैं उसे नकलची, नकलिया, नकली आदि नामों से जाना जाता है। नकल प्रकीर्ण की ऐसी विधा है, जिसमें एक स्थिति विशेष की कटाक्ष के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। किसी विकृत चीज की तुलना किसी दूसरे से की जाती है। नकल दो तरह की होती है, एक नकल करना, एक नकल मारना। ''नकल को लोकविनोद का प्राचीन साधन कहा जाता है।

7. मसखरी

सामने वाला बुरा न मानता हो मसखरी से अभिप्राय उपहास तथा मजाक करना है। मसखरी हंसोड़ महिला को भी कहते हैं। इसको देहात में मसखरी के नाम से भी जाना जाता है। मसखरी की परंपरा लोकजीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मसखरी अक्सर बड़ों एवं बराबर वालों के साथ की जाती है। मसखरी के अंतर्गत उपस्थिति होना अनिवार्य है। लोकजीवन में आमने–सामने की परिस्थिति में ही मसखरी की जा सकती है। इसमें परस्पर दो व्यक्ति भी एक–दूसरे की मसखरी कर सकते हैं। ''मसखरी वास्तव में मखौल एवं मजाक का छोटा स्वरूप है। मसखरी के अंतर्गत सटीकता, परिस्थिति, तत्परता, आंचलिकता आदि विशेषताएं समाहित होती हैं।''

8. गप्प

गप्प से अभिप्राय झूठी एवं काल्पनिक बात से है या फिर मन बहलाने के लिए कही गई बात से है। मनोरंजन के लिए बेसिर पैर की बात कहना गप्प कहलाती है। देहात में गप्प पेलने व हांकने वाले आदमी को गप्पी कहा जाता है। वास्तव में गप्प के अंदर मच्छर से शेर तक का सफर समाहित होता है। इसके अंतर्गत कल्पनाओं का अपना अलग ही संसार है। बहुत सी बातें ऐसी हैं जिन्हें हम केवल सोचते हैं। वास्तविकता से उनका कोई लेना–देना नहीं होता। हमारा मस्तिष्क हमें घर बैठे–बैठे पता नहीं कहां–कहां की उड़ान भरवा देता है।

9. गपोड

गपोड़ वास्तव में गप्प के मुकाबले बड़ा झूठ होता है, इसके अंतर्गत मनोविनोद एवं अहं तृप्ति के लिए कही गई बात शामिल होती है। गपोड़ हांकने तथा पेलने वाले व्यक्ति को गपोड़ी कहा जाता है। गप्प के मुकाबले गपोड़ में काल्पनिकता एवं झूठ का भाव ज्यादा शामिल होता है। सामने वाले को पता होता है कि कहने वाला झूठ बोल रहा है, लेकिन फिर भी वह अपने मनोरंजन के लिए गपोड़ सुनता है। गपोड़ कहने वाले को गपोड़ी की संज्ञा दी जाती है।

10. गडंग़

''गडंग से अभिप्राय झूठी बड़ाई से है। बहुत बड़ा झूठ बोलना और उसे गर्व के साथ प्रस्तुत करना गड़ंग कहलाता है। गडंग़ वास्तव में गर्वोक्ति है। गड़ंग में गल्परस का परिपाक होता है। इसमें होड़ लगाकर गड़ंग मारने की प्रतिज्ञा का निर्वाह किया जाता है। गडंग हांकना भी बड़े कौशल का कार्य है। इसमें विस्मय रस का आस्वादन अथवा ऊट–पटांग कथन से आनंद की प्राप्ति का उद्देश्य रहता है।''१५ असंगति को संगति प्रदान करके निष्कर्षतरू उसे असंगत सिद्ध करने में भी एक मजा आता हैरू गडंग में शत–प्रतिशत झूठ होती है।

11. मिसल

मिसल का अभिप्राय है सनद आदि की नकल। लोकजीवन में मिसल को मिसाल के नाम से भी पुकारा जाता है। मिसाल से अभिप्राय है उदाहरण देकर समझाना। लोकजीवन में जो उदाहरण दिया जाता है वह मिसल या मिसाल ही कहा जाता है। ''मिसल लोक विनोद की यह विधा है, जिसके अंतर्गत मिसाल या उदाहरण देकर बताया जाता है। मिसल से अभिप्राय है लोकजीवन में घटित हुई घटना को उदाहरण देकर प्रस्तुत करना। मिसल ऐसा दृष्टांत है जिसके कहने एवं सुनने से हास्य उत्पन्न होता है।''१६ मिसल ऐसे उदाहरण जिनमें हास्य हो, ऐसा दृष्टांत जिसमें कहने एवं सुनने वाले हास्य उदाहरण लोकप्रिय होता। तेरी गैल तो बंजारे के कुत्ते आली बणेगी, गदी टूटी पड़ी, भाड़े शामली तक।

12. मनोविनोद

मनोविनोद लोक विनोद का ही हिस्सा है। मन के मनोरंजन के लिए विनोदपूर्ण बात को मनोविनोद की संज्ञा दी गई है। इसमें व्यक्ति अपने मन की भावनाओं को तुरंत अभिव्यक्त कर देता है। रिश्तों का भी ध्यान नहीं देता। मनोविनोद का अभिप्राय केवल और केवल मनोरंजन होता है। वास्तव में लोकविनोद एवं मनोविनोद सभी मनोरंजक विधाओं के परिचायक हैं। बालमनोविनोद, पुरुषमनोविनोद, महिलामनोविनोद अलग–अलग स्वरूपों में अभिव्यक्त किए जा सकते हैं।

13. बतंगड़

छोटी सी बात जब मनोरंजन का ऐसा साधन बन जाये जिसको सुनकर लोग हंसने लगे तो उसे बतंगड़ कहते हैं। बात का वह स्वरूप जो काल्पनिकताओं एवं झूठ के बल पर वास्तविकता का रूप धारण कर ले उसे बतंगड़ कहा जाता है। बतंगड़ वास्तव में बात का ही बिगड़ा हुआ वह स्वरूप है जिसमें मनोरंजनात्मकता एवं घटनात्मकता समाहित होती है। जिस प्रकार किसी भी साधारण सब्जी को कुछ लोक बढिया मिर्च–मसालों के छौंक से तलकर खूब चटपटी व खूबसूरत बना डालते हैं उसी भांति बातों को भी खूबसूरत बतंगड़ का रूप देकर अपनी इसी हुनर रूपी चासनी में सराबोर करके कुछ लोग इस ढंग से परोसते हैं कि लोग काफी आनंद से इसका रसस्वादन लेते रहते हैं।

14. मजाक

मजाक से अभिप्राय उस हंसी ठिठोली से है जिसका प्रयोग लोकजीवन में जनमानस अपने मनोरंजन के लिए करते हैं।

मजाक करने वाले व्यक्ति को मजाकिया भी कहा जाता है। मजाक लोक विनोद की वह विधा है जिसके माध्यम से जनमानस अपना मनोरंजन करते हैं। हंसी–मजाक की गति में मंद मंथरता, क्रम में संभगता और प्रभाव में आंगिक और मानसिक दृष्टि से क्षीणता पैदा हो जाती है।

15. चीड़–चबोड़

चीड़ से अभिप्राय शारीरिक भाव–भंगिमाओं के माध्यम से अपने मन की अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत करना है। ''चीड़–चबोड़ लोकजीवन की वह विधा है जिसमें बालमन अपनी कुंठा को शरीर की भंगिमाओं एवं आवाज के साथ प्रस्तुत करता है। चीड़ के अंतर्गत तीसरा व्यक्ति जिसे हम भाव–भंगिमाओं को अभिव्यक्त करने वाले के अतिरिक्त तीसरे व्यक्ति जो इस घटना को देख रहा है आनंद की अनुभूति होती है।'' चीड़चबोड़ दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। चीड़ खिजाना, चीड़ निकालना, चीड़चबोड़ करना आदि अनेकों ऐसे मुहावरें हैं जिनका संबंध चीड़ से है।

16. हंसी ठठ्ठा

हंसी ठठ्ठा लोकविनोद की वह विधा है जिसके अंतर्गत किसी को उपहास बनाकर हंसी मजाक किया जाता है। लोकमनोरंजन के लिए हंसी ठठ्ठा का सहारा लिया जाता है। हंसी ठठ्ठा किसी घटना विशेष पर भी आधारित हो सकता है। इसके लिए मजाक हेतु नकल आदि का सहारा भी लिया जा सकता है। ''हंसी ठठ्ठा लोकजीवन का वह उन्मुक्त मनोरंजक माध्यम है जिसके माध्यम से लोग दिल खोलकर हंसते हैं। हंसी ठठ्ठा में हास का उन्मुक्त, खुला और संकोचरहित रूप सामने आता है। इसके अंतर्गत हमजोलियों की उपस्थिति इसको और अधिक उन्मुक्त एवं संकोचरहित बनाती है।''

17. फरड़े

फरड़े से अभिप्राय है किसी बात को मसाला लगाकर काल्पनिकता के साथ बढ़ाचढ़ा कर प्रस्तुत करना। लोकजीवन में फरड़े फेंकने वाले व्यक्ति को फरड़ेबाज की संज्ञा दी गई है। इसके साथ–साथ फरड़े फेंकने वाले व्यक्ति को फरडू, फरड़े फेंक आदि नामों से भी जाना जाता है। फरड़ेबाज वह व्यक्ति होता है जो अपनी बात को सदैव बढ़ाचढ़ा कर प्रस्तुत करता है, इसमें झूठ एवं काल्पनिकता का पुट सदैव विद्यमान रहता है। हरियाणवी लोकजीवन में फरड़े व्यक्ति विशेष पर निर्भर करते हैं। फरड़ेबाज केवल वही व्यक्ति हो सकता है जिसको फरड़े फेंकने की आदत हो। लोकजीवन में रचने एवं बसने वाले व्यक्ति फरड़ेबाज को भली–भांति जानते होते हैं फिर भी उसके फरड़े सुनने के लिए जानबूझकर उसके साथ छेडख़ानी करते हैं और उसकी फरड़ेबाजी सुनते हैं।

18. अंघाई

अंघाई लोकजीवन की मस्ती का परिचायक है। इसके अंतर्गत अहमन्यता, बलशालीनता एवं मस्ती समाहित होती है। मस्ती में आना अंघाई का परिचायक है। इसीलिए अंघाई करने वाले व्यक्ति को अंघाया होड़ भी कहा जाता है। अंघाई लागणा, अंघाई करणा लोकजीवन में ऐसे प्रचलित मुहावरे हैं जिसका सीधा संबंध अंघाई से है। ''अंघाई वास्तव में वह शरारतपूर्ण मस्ती है जिसके माध्यम से लोग मनोरंजन करते हैं। इस मस्ती के पीछे अनेक कारण हो सकते हैं, लेकिन कुंठा, स्वाभिमान, अभिमान आदि भी अंघाई के कारण हो सकते हैं।

19. ठोला–ठसका

ठोला–ठसका दो शब्दों के मेल से बना है। इसमें एक शब्द ठोला है, दूसरा शब्द ठसका है। ठोले से अभिप्राय गांव के पान्ने विशेष से है, जबकि ठसका में हंसी की धसक और आकस्मिकता आ धमकती है। लोकजीवन में एक ठोले के लोग दूसरे ठोले के लोगों का परस्पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए मजाक करते रहते हैं। इन मजाकों को ठोला–ठसका कहा जाता है। इसके साथ ही ठोला–ठसका वह सामुहिक प्रक्रिया है जिसमें सामुहिक रूप से किसी का उपहास किया जाता है और लोग उसपर हंस पड़ते हैं। इसके अंतर्गत जब मजाक किया जाता है तो सामने वाले की उत्तर देने की संभावना से पहले ही वाचक के साथ उसके समर्थक जोर–जोर से ठहाका लगाकर हंस पड़ते हैं।

20. चुटकला

चुटकला वह मजेदार बात है जिसको सुनकर सामने वाले हंस पड़ते हैं, चुटकले को लतीफा के नाम से भी जाना जाता है। चुटकला हरियाणवी ठिठौली का वह स्वरूप है, जिसमें कलात्मक चोट की जाती है। चुटकला कहने वाला वाचक अपनी भावाभिव्यक्तियों एवं शारीरिक भंगिमाओं के माध्यम से चुटकले को और अधिक रोचक बनाता है। डॉ. शंकर लाल यादव के अनुसार– चुटकले वे छोटी–छोटी कहानियां हैं जो किसी लोकोक्ति के स्पष्टीकरण में काम आती हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि लोकोक्तियों की मूल स्त्रोत्र यह चुटकले ही रहे होंगे अर्थात इन चुटकलों का मार्मिक वाक्य सारभूत तोड़ ही लोकोक्ति का रूप ले लेता है।

निष्कर्ष

लोक विनोद लोक जीवन की एक ऐसी विधा है जिसमें समाहित विविधताओं का समागम अनेक आंचलिक विधाओं को समेटे हुए है। इस शोध पत्र में ग्रामीण अंचल में बिखरी हुई विधा रूपी मोतियों को संजोकर एक स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। इन विधाओं में जनवार्ता, हाजिरजवाबी, बुझावल, मखौल, ब्योंक, नकल, मसखरी, गप्प, गपोड़, गडंग़, मिसल, मनोविनोद, बतंगड़, मजाक, चीड़–चबोड़, हंसी ठठ्ठा, फरड़े, अंघाई, ठोला–ठसका, चुटकला आदि विधाएं शामिल हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. भीम सिंह मलिक, लोकविनोद शोध पत्र, प्रकाशन 1992, पृष्ठ संख्या 5
2. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 223
3. डॉ. जय नारायण कौशिक, हरियाणवी हिंदी कोश, प्रकाशन हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़
4. 1985, पृष्ठ संख्या 771
5. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 224
6. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 224
7. देवी शंकर प्रभाकर, हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, उमेश प्रकाशन, नई दिल्ली 1983, पृष्ठ
8. संख्या 111
9. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 230
10. देवी शंकर प्रभाकर, हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, उमेश प्रकाशन, नई दिल्ली 1983, पृष्ठ
11. संख्या 121
12. डॉ. भीम सिंह मलिक, लोकविनोद शोध पत्र, प्रकाशन 1992, पृष्ठ संख्या 7
13. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 231
14. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 233

15. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 232
16. डॉ. भीम सिंह मलिक, लोकविनोद शोध पत्र, प्रकाशन 1992, पृष्ठ संख्या 8
17. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 234
18. डॉ. भीम सिंह मलिक, लोकविनोद शोध पत्र, प्रकाशन 1992, पृष्ठ संख्या 8
19. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 235
20. डॉ. भीम सिंह मलिक, लोकविनोद शोध पत्र, प्रकाशन 1992, पृष्ठ संख्या 9
21. डॉ. भीम सिंह मलिक, लोकविनोद शोध पत्र, प्रकाशन 1992, पृष्ठ संख्या 10
22. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 236
23. डॉ. शंकर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, पृष्ठ संख्या 302